बी०ए० पार्ट-I (हिन्दी रचना)

डॉ. [illegible] प्रसाद
हिन्दी विभाग
[illegible] कॉलेज

07.07.20

पंथ होने दो अपरिचित (महादेवी) [illegible]

प्रश्न : 'पंथ होने दो अपरिचित' कविता का भाव-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : 'पंथ होने दो अपरिचित' महादेवी द्वारा लिखित कविता है। यह कविता 'दीपशिखा' नामक संग्रह से लिया गया है। दीपशिखा साधना-रत प्राणों का प्रतीक है। जिस प्रकार दीपक स्वयं को जलाकर दूसरों को प्रकाश देता है उसी प्रकार कवयित्री स्वयं वेदना में जलकर लोक-मंगल की कामना करती है। इसकी विरह-व्यथा लोक-हित में है। उसमें ओज, करुणा और उत्सर्ग है। इसके लिए वेदना ही वरदान है, स्वयं साधना-मार्ग निर्वाण बन गया है। कवयित्री उसका स्वागत करती है।

कवयित्री कहती है कि पथ [illegible] ही सकता है। इस पथ पर अकेले चलने की [illegible] हैं। फिर भी कोई चिन्ता नहीं। वे कोई दूसरे और होंगे जो पथ की विघ्न-बाधाओं से हार जाते हैं। वे दूसरे भी व्यक्ति हैं [illegible] [illegible] [illegible] को [illegible] होकर अपने निश्चय [illegible] के [illegible] [illegible] हैं। मैं ने तो करुणा का [illegible] है। करुणा के [illegible] [illegible] और [illegible] के [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] भी पार करने [illegible] [illegible] [illegible] अपने [illegible] पर [illegible] [illegible] [illegible] हैं। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] होंगे। [illegible] और [illegible] के [illegible] [illegible] [illegible] होंगे। [illegible] [illegible] जीवन के [illegible] का [illegible] [illegible] होंगे।

[illegible] कवयित्री कहती है — [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] जाती है। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] नहीं [illegible] है। [illegible] मैं तो [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] रही हूँ और [illegible] [illegible] की [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] रही हूँ, जिसे [illegible] का [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] रही हूँ। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] भी [illegible] [illegible] [illegible] भी नहीं [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] के [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है।

इसलिए [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] दुख [illegible] का [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] दुख [illegible] के [illegible] [illegible]

P.T.O

मेरा मौन हृदय तो व्यथा के आँसुओं और मनोहर सपनों के कमलों की भेंट लेकर ही तुम्हारा स्वागत करेगा। मिलन में प्रिय और प्रिया दोनों की निजता विलीन हो जाती है, दोनों एक हो जाते हैं किन्तु विरह में प्रत्येक का अपना अस्तित्व बना रहता है और एक दूसरे की स्मृति बनी रहती है। यहाँ महादेवी अपने व्यक्तित्व को प्रिय में लीन नहीं करना चाहतीं, वरन् अपनी पृथक सत्ता को अक्षुण्ण रखना चाहती हैं।

महादेवी का पथ करुणा का है। यह करुणा व्यक्तिगत नहीं है बल्कि समाजगत है। साथ ही इसमें निर्माण का अदम्य उत्साह है, संसार में स्वर्ण प्रभात लाने की तीव्र इच्छा है। महादेवी वर्मा ने स्वयं एक जगह लिखा है — 'इस समय मेरी प्रवृत्ति एक विशेष दिशा की ओर उन्मुख हुई है जिसमें व्यक्तिगत दुःख समष्टिगत गंभीर वेदना का रूप धरने लगा है और प्रत्यक्ष का स्थूल एक सूक्ष्म चेतना का आभास देने लगा है।

यह कहना समीचीन प्रतीत होता है कि महादेवी के गीतों में जिस दुःख के प्रति अपनी आस्था प्रकट की जाती है वह सूक्ष्म और तुच्छ नहीं बल्कि उनके द्वारा रचा गया वेदना के संसार का प्रस्फुटन है। इस प्रकार जो देखें तो महादेवीजी की करुणा में एक स्वाभिमान है। इसलिए वह अपने व्यक्तित्व को अलग रखना चाहती हैं। स्पष्टतः महादेवी के करुणा के तीन गुण हैं। प्रथम, वह व्यक्तिगत नहीं, समाजगत है। द्वितीय उसमें सृजन की उत्कट वांछित कामना है। तृतीय, उसमें स्वाभिमान है। इन तीनों गुण मिलकर ही महादेवी का व्यक्तित्व बनाता है। साधना के मार्ग पर अपरिचित होने पर भी एकाकी चलने की भावना में कवयित्री का अटूट धैर्य और दृढ़ संकल्प झलकता है। यहीं कवयित्री का विरह-प्रेम दर्शनीय है और सराहनीय है। वह अद्वैत नहीं चाहतीं, क्योंकि उसमें साधक का अस्तित्व ही लुप्त हो जाता है। द्वैत स्थिति में ही मिलन की संभावना है।